बाबा साहेब के दर्शन को अपने जीवन में अंगीकार कर, उनके जीवन से प्रेरणा लें युवा पीढ़ी:राज्यपाल 13-4-2107

राष्ट्र विकास के लिए सेवाभाव जरूरी, हिन्दू धर्म से कुरीतियों व भेदभाव को खत्म करने के लिए डॉ. अम्बेडकर ने दी चुनौती: राज्यपाल
ज्ञान के प्रतीक थे डॉ. अम्बेडकर, दुनियाभर में सबसे अधिक लगी हैं डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमाएं:सांपलामहर्षि वेद व्यास, वाल्मिकी व डॉ अम्बेडकर से बना है भारत: पतंगे
त्यागी व महान संघर्षशाली व्यक्तित्व की पहचान हैं डॉ अम्बेडकर: बेदी

डॉ. अम्बेडकर के विचार चिंतन व कृतित्व को जीवन में अपनाने की जरूरत: कुलपति

कुरुक्षेत्र, 12 अप्रैल। हरियाणा के राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने कहा है कि भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन को देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अंगीकार करने की जरूरत है। उनके जीवन दर्शन व विचारों को अपनाकर ही हम वर्तमान व आने वाले समय की चुनौतियों से निपट सकते हैं। वे बुधवार को डॉ भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन व प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

इससे पूर्व कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विधि विभाग के प्रांगण में भारत रत्न बाबा साहेब डॉ भीमराव अम्बेडकर की प्रतिमा का अनावरण महामहिम राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी ने किया। इस अवसर पर भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री भारत सरकार विजय सांपला व हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी, हिन्दुस्तान प्रकाशन संस्थान, मुम्बई के रमेश पतंगे, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा, कुलसचिव डॉ प्रवीण कुमार सैनी, एडीसी धर्मवीर सिंह, एसपी अभिषेक गर्ग सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं गणमान्य लोग मौजूद रहे।

राज्यपाल ने कहा कि डॉ भीमराव अम्बेडकर ने नारा दिया था कि शिक्षित रहो, संगठित

रहो व संघर्ष करो। उन्होंने इस नारे के माध्यम से समाज को राष्ट्र उत्थान के लिए संगठित होने व कुरीतियों को खत्म करने का आह्वान किया था। वे मानते थे कि मानव को मानव बनने के लिए शिक्षा जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से आचार व्यवहार, चाल, चेतन में बदलाव किया जा सकता है। शिक्षा का प्रकटीकरण, व्यवहार व अर्थ में होना चाहिए। डॉ अम्बेडकर ने ज्ञान को तो हासिल कर उसे अपने जीवन में उतारा, इसलिए वे दुनिया में अमर हो गए।

उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा के स्थापित होने से युवा पीढ़ी को उनसे प्रेरणा मिलेगी। डॉ अम्बेडकर ने अपने छात्र जीवन में जिस तरह के भेदभाव का सामना किया। उसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। समाज से असमानता को खत्म करने की जरूरत है और इसके लिए दलित शब्द के प्रयोग से हमें बचना चाहिए। भारत के विकास के लिए सामाजिक समरसता जरूरी है। देश में कुछ संगठन इस दिशा में काम कर रहे हैं। 21वीं सदी में भारत के विकास के लिए जब हम सेवाभाव से काम करेंगे तभी हम भारत को एक नई दिशा दे सकेंगे। डॉ अम्बेडकर ने अपने जीवन में भी कुरीतियों व भेदभाव को खत्म करने के लिए देश के आगे चुनौती प्रस्तुत की थी। एकता, समरसता, बंधुता, परस्पर अनुकूलता समय की जरूरत है। हम मिलकर चलेंगे तो दुनिया में सफलता की नई कहांनियां लिखेंगे। उन्होंने विधि विभाग के प्रांगण में प्रतिमा स्थापित करने के लिए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कैलाश चन्द्र को बधाई दी।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्य मंत्री भारत सरकार विजय सांपला ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर सिर्फ दलितों के मसीहा नहीं थे बल्कि वे भारत के निर्माता थे। देश को बनाने में उनका अमूल्य योगदान रहा है। वे कहते थे कि देश को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने के लिए हर 10 वर्ष के बाद मुद्रा में बदलाव जरूरी है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विमुद्रीकरण की प्रक्रिया को शुरू कर देश को आर्थिक रूप से मजबूत किया है। डॉ. अम्बेडकर ने महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ-साथ किसान, मजूदर सभी की आवाज को बुलंद किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति को आह्वान किया कि

उनका मंत्रालय पिछड़े व वंचितों के लिए कई तरह के कार्यक्रम चलाता है। विश्वविद्यालय का बीआर अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र इसका लाभ उठा सकता है। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर ज्ञान के प्रतीक थे इसलिए डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमाएं दुनियाभर में सबसे अधिक लगी हैं

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता हिन्दुस्तान प्रकाशन संस्थान, मुम्बई के रमेश पतंगे ने कहा कि भारत देश महर्षि वेद व्यास, वाल्मिकी व डॉ अम्बेडकर से बना है। हमें इसके महत्व को समझने की जरूरत है। डॉ. अम्बेडकर सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत थे। इसलिए ही भारत के संविधान को दुनिया का सबसे बड़ा सामाजिक दस्तावेज कहा गया है। भारत के संविधान में स्वतंत्रता, समता व बंधुता के सिद्धान्तों को इस तरीके से रखा गया है ताकि देश का प्रत्येक व्यक्ति पूरी आजादी के साथ अपनी बात को रख सके। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर को हमें राष्ट्र निर्माता के रूप में देखना चाहिए। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा को हमें लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में देखना चाहिए।

उन्होंने कहा कि देश को राजनैतिक आजादी अहिंसा के बल पर राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने दिलवाई तो सामाजिक क्रान्ति, सामाजिक आजादी के लिए आने वाली पीढिय़ा अम्बेडकर को हमेशा याद रखेंगी।

हरियाणा के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री कृष्ण कुमार बेदी ने कहा कि पिछले 22 वर्षो से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में बाबा साहेब की प्रतिमा स्थापित करने की मांग थी। हरियाणा स्वर्ण जयंती वर्ष में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने इसे पूरा कर एक ऐतिहासिक काम किया है। डॉ. अम्बेडकर ने देश की एकता व अखंडता के लिए जो काम किया उसे ध्यान में रखकर आगे बढऩे की जरूरत है। उनके साथ जीवन भर भेदभाव हुआ लेकिन उन्होंने कभी भी अलगावा की बात नहीं की और इसी धरती पर संघर्ष कर करोड़ो लोगों के जीवन को बदला। इतिहास में उनसे बड़ा कोई त्यागी पुरूष नहीं हुआ है।

मेहमानों का स्वागत करते हुए कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा ने कहा कि डॉ. अम्बेडकर के विचार चिंतन व कृतित्व को जीवन में अपनाने की जरूरत है। बाबा साहेब सही मायनों में मानवता के पोषक व्यक्ति थे। छात्र जीवन में उनके साथ भेदभाव हुआ लेकिन उन्होंने इस भेदभाव के खिलाफ अहिंसक लड़ाई लड़ी। कुलपति ने कहा कि समरस व संयुक्त समाज के लिए हमें विषमताओं को भगाना होगा। आज की युवा पीढ़ी को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर समतायुक्त समाज के लिए संकल्पबद्ध होने की जरूरत है।

इस मौके कुलसचिव डॉ प्रवीण कुमार सैनी ने सभी का धन्यवाद किया व बीआर अम्बेडकर अध्ययन केन्द्र के निदेशक डॉ सुभाष चन्द ने मेहमानों का स्वागत किया। इस मौके डीन एकेडमिक अफेयर प्रो. अनिल वोहरा, डीन आफ कालेज प्रो. रजनीश शर्मा, प्रो. मंजूला चौधरी, डीन प्रो. वीके गुप्ता, प्रो. सीआर ड्रोलिया, पूर्व मंत्री एमएल रंगा, डॉ. राम भगत लांगयान, डॉ सीडीएस कौशल, डॉ दिनेश राणा, डॉ. सीसी त्रिपाठी, डॉ चांद राम जिलोवा, प्रो. फकीर चंद, प्रो. दर्शन सिंह, प्रो. शकुंतला नागर, प्रो. निर्मला चौधरी, डॉ जयकिशन, डॉ सुनिता सिरोहा, प्रो. हवा सिंह, प्रो. नरेन्द्र सिंह, प्रो. महावीर नरवाल, डॉ. आनंद, डॉ. हुकम सिहं, डॉ. ओपी आहूजा, डॉ. हरजीत सिंह, डॉ बंसीलाल सहित कई अधिकारी व कर्र्मचारी मौजूद रहे।

'भारत रत्न' डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर
प्रतिमा अनावरण
प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी
श्री विजय सांपला